मनोज चित्र कथा
मूल्य 6.00
लोहे का शैतान
डबल सीक्रेट एजेन्ट 00½
राम-रहीम
VAASU'S UPLOAD

जैकब, अपना रिवॉल्वर निकालो और इस पर फायर करो।
ओ.के. प्रोफेसर!

जैकब ने जेब से रिवॉल्वर निकालकर रोबोट पर कई फायर किये।
हा...हा... हा... मि. जैकब, आप मुझ पर गोलियां बरसा रहे हैं अथवा फूल?
धांय-धांय-धांय
बहुत खूब!
वाह!
लेकिन रोबोट पर गोलियों का कोई प्रभाव नहीं हुआ।

उसके बाद प्रोफेसर ने रोबोट के अस्त्र-शस्त्र चलाने और निशाने की परीक्षा ली।

कहने के साथ ही प्रोफेसर ने उसकी पीठ पर लगे दूसरे नीले रंग के बटन को दबाकर उसे पहले की तरह निर्जीव कर दिया।

निःसन्देह आप महान् हैं प्रोफेसर! कल जब दुनिया को आपके इस आविष्कार का पता चलेगा तो आपका नाम अमर हो जायेगा।
मैंने आयरनमैन का आविष्कार नाम पाने ... उन्नति और विश्व की निगाहों में उसका गौरव बढ़ाने के लिये किया है...
...मेरी हार्दिक इच्छा है कि युद्ध के समय ऐसे ही रोबोटों को सेना के रूप में प्रयोग किया जाए, ताकि हमारे देश को जानी नुकसान न उठाना पड़े।
आपकी तरह आपके विचार भी महान् हैं प्रोफेसर! क्या मैं आपसे इस रोबोट के सम्बन्ध में कुछ पूछ सकता हूं?
हां-हां, क्यों नहीं! पूछो, क्या पूछना चाहते हो?
इस रोबोट को तैयार करने में हमें आपके साथ काम करते हुए एक वर्ष से ऊपर हो चुका है। लेकिन हमें आज तक यह मालूम नहीं हो पाया कि आपने इसे सोचने-समझने और बोलने की शक्ति कैसे दी...

...यह हमारे लिये आश्चर्य का ही विषय है कि बिना परिचय दिये ही इसने न केवल आपको, बल्कि हम सबको भी पहचान लिया।
आज मेरी खुशियों का सबसे बड़ा दिन है। अत: इस सम्बन्ध में आज मैं तुम्हें जरूर बताऊंगा। सुनो...
...यह जो तुम लोग इस खाने में दो बटन देख रहे हो, इसमें लाल रंग के बटन को दबाने पर इसके भीतर की मशीनरी और कम्प्यूटर चालू हो जाते हैं और रोबोट इन्सानी हरकत में आ जाता है...
...इसके शरीर में मैंने इन्सानों की तरह ही तारों की नाड़ियां आदि बनाई हैं, जो इसके पूरे शरीर में करंट फेंकती हैं, जिससे यह हाथ-पैर और जुबान हिला सकता है। उसी करंट से इसका कम्प्यूटर मस्तिष्क भी चलता है...

खैर, अब मैं तुम लोगों को सबकुछ बता चुका हूं। तुम लोग थके हुए होगे। अतः अब जाकर आराम करो। सुबह फिर मुलाकात होगी।

ओ.के. प्रोफेसर, गुड नाईट!

प्रो. भार्गव अपनी इकलौती बेटी कामनी के साथ प्रयोगशाला के ही एक हिस्से में रहते थे। उन दोनों के अलावा उनका एकमात्र वफादार नौकर शम्भु भी वहीं रहता था।

जैकब प्रयोगशाला से निकलकर एक कमरे में पहुंचा।
पहले ड्रेगन को फोन कर लूं। फिर शम्भु को खाने के लिये कहूंगा।

शीघ्र ही-
प्रोफेसर ने रोबोट तैयार कर लिया है बॉस! और वह उसका परीक्षण भी कर चुका है, जो पूर्णतया सफल रहा है। उसका विचार कल फार्मूले समेत रोबोट को सरकार के हवाले कर देने का है।
ओह, तब सुनो जैकब...

... कुछ ही देर में मेरे आदमी प्रयोगशाला पहुंच जायेंगे। उनके साथ मिलकर न केवल तुम्हें रोबोट और उससे सम्बन्धित कागजातों को ही हासिल करना है, बल्कि प्रोफेसर और उनकी बेटी कामनी का भी अपहरण करके सकुशल हमारे अड्डे तक पहुंचना है।
ओ.के. बॉस! मैं समझ गया।

सम्बन्ध-विच्छेद करने के पश्चात् जैकब प्रो. भार्गव के निवास-स्थान पर पहुंचा, जो प्रयोगशाला के ही एक हिस्से में बना हुआ था।
हैलो कामनी, शम्भु कहां है?
हैलो जैकब!

शम्भु काका किचन में हैं, परन्तु डैडी कहां हैं और आप अभी तक यहां कैसे?
मैं आज यहीं रुकूंगा, क्योंकि अंकल अपना नया आविष्कार कल गृहमंत्री जी के द्वारा सरकार के हवाले करने जा रहे हैं।

ओह! क्या रोबोट तैयार हो गया है?
तैयार ही नहीं हो गया, बल्कि उसका परीक्षण भी सफल हो चुका है। निःसन्देह कामनी, प्रोफेसर अंकल का यह आविष्कार पूरी दुनिया को दांतोंतले उंगली दबा लेने को मजबूर कर देगा।

और आधी रात के बाद जब प्रोफेसर भार्गव, उनकी बेटी कामनी और नौकर शम्भु अपने-अपने कमरों में गहरी नींद सोये हुए थे तो एक बख्तर बंद गाड़ी प्रयोगशाला के बाहर मुख्य गेट के निकट आकर रुकी।
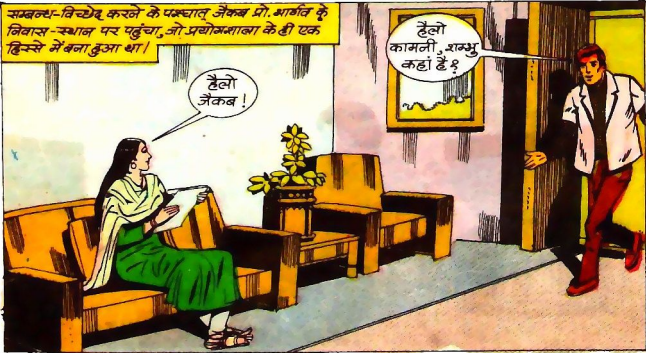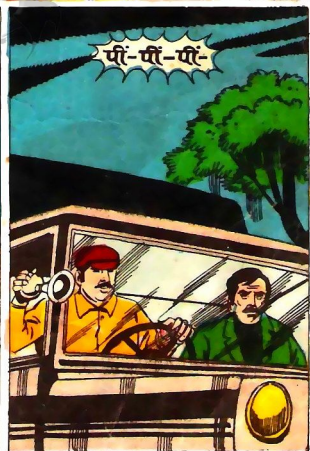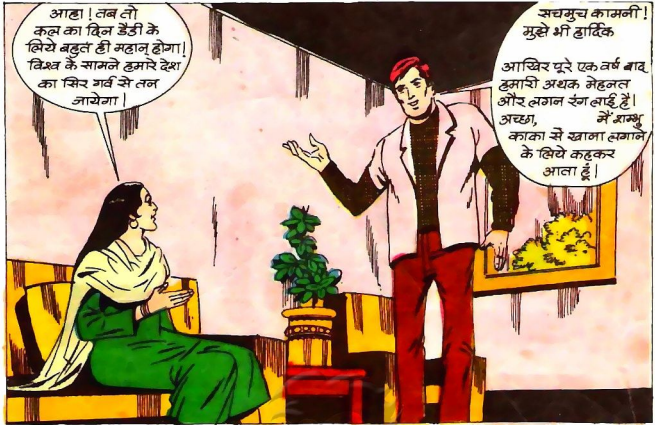
हॉर्न की आवाज सुन अपने कमरे में लेटा जैकब चौंक उठा।

शीघ्र ही जैकब ने जाकर मेन गेट खोला।

गाड़ी भीतर प्रविष्ट हो भीतरी द्वार के सामने जैसे ही रुकी, उसके पिछले हिस्से से धड़ाधड़ कई सशस्त्र व्यक्ति कूदकर बाहर निकल आये।

सुनो, प्रोफेसर भार्गव, उनकी बेटी कामनी और नौकर अपने-अपने कमरों में गहरी नींद सोये हुए हैं। तुममें से कुछ कामनी पर काबू करो और बाकी मेरे साथ आओ।
ठीक है, चलो!
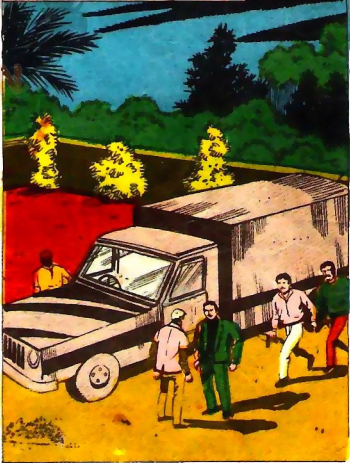
अन्दर प्रविष्ट होने के बाद कुछ बदमाश जैकब के बताने पर कामनी के कमरे की ओर बढ़ गये। बाकियों के साथ जैकब जैसे ही प्रोफेसर के कमरे में पहुंचा, किसी आहट से प्रोफेसर की आंख खुल गई।
खामोश रहो प्रोफेसर!
क... कौन है?

लाइट ऑन करो जैक!
ओ.के.!

लाइट ऑन होते ही कमरे में तेज प्रकाश फैल गया।
ओह! जैकब तुम! क्या चाहते हो? कौन हैं ये लोग?
इन्हें अपना मित्र ही समझिये प्रोफेसर! ये आपसे एक सौदा करने आये हैं। मेरी आपको नेक सलाह यही है कि आप इनका सौदा मंजूर कर लें।
क्या मतलब? कैसा सौदा?
अपने रोबोट और उसे बनाने के फार्मूले का प्रोफेसर! इसके लिये आपको मुंहमांगी रकम दी जायेगी।
क्या बकते हो? जानते नहीं हमारे देश को उस आविष्कार की कितनी जरूरत है!
देश से ज्यादा इस आविष्कार की हमारे बॉस को जरूरत है प्रोफेसर! भला तुम्हारा भूखा देश तुम्हें इसकी क्या कीमत दे पायेगा...
...यही ना, केवल एक-दो लाख रूपये और एक सम्मान का तमगा। जबकि यदि तुम हमारे बॉस के लिये काम करोगे तो न केवल दुनिया भर की ऐश तुम्हारे कदम चूमने लगेगी, बल्कि लाखों रूपये भी तुम्हें प्रति माह मिलेंगे।
खामोश कुत्ते! मैं तुम्हारा खून पी जाऊंगा। तुम मुझे गद्दारी सिखा रहे हो।

जैकब के इशारे पर तुरन्त दो व्यक्तियों ने प्रोफेसर को बाजुओं से थाम लिया।
जोश में होश मत खोओ प्रोफेसर! जैकब ठीक ही कह रहा है। इनके लिये काम करके आप और आपकी बेटी जिन्दगीभर ऐश से रह सकते हैं।
हुम्म! अब समझा! तो तुम्हीं हो इन्हें मेरे गुप्त आविष्कार के बारे में बताने वाले। नीच, गद्दार, अब मैं तुम्हें जेल की चक्की पिसवा कर ही रहूंगा।
यदि ऐसा मौका तुम्हें मिले तो जरूर अपने दिल की इच्छा पूरी कर लेना प्रोफेसर! फिलहाल हमें यह बताओ कि रोबोट बनाने का फार्मूला तुमने कहां छिपा रखा है?
यह तुम मेरे जीते-जी कभी नहीं जान पाओगे हराम-जादे, देश-द्रोही!
तभी कुछ बदमाश बेहोश कामनी को लेकर वहां आ पहुंचे।
कामनी, मेरी बेटी! कुत्ते नीच, कमीनो, क्या कर दिया तुमने मेरी बेटी को!
घबराओ नहीं प्रोफेसर, कामनी केवल बेहोश है। हां, यदि तुमने रोबोट तैयार करने वाला फार्मूला हमारे सुपुर्द नहीं किया तो यह लाश में भी बदल सकती है।
ओह.... नहीं...!

जैकब की बात सुनकर प्रोफेसर भार्गव के दिलो-दिमाग में एक तूफान-सा छिड़ गया।
हे ईश्वर, मैं क्या करूं? यदि मैंने इनकी बात नहीं मानी तो ये... उफ! नहीं, फिलहाल मुझे इनकी बात मान ही लेनी चाहिये। समय आने पर निपटूंगा इनसे!
हमारे पास ज्यादा समय नहीं है प्रोफेसर! जल्दी फैसला करो। तुम्हें अपनी बेटी की जान प्यारी है अथवा नहीं!
मुझे मेरे प्राइवेट कमरे में ले चलो। फार्मूले के कागजात वहीं रखे हैं!
गुड! ले चलो इन्हें!
प्रयोगशाला के ही एक हिस्से में प्रोफेसर भार्गव का प्राइवेट रूम था। वहां किसी को भी जाने की इजाजत नहीं थी। जैकब और उसके साथी प्रोफेसर को लेकर वहीं पहुंचे।
इतनी आसानी से काम बन जायेगा, यह तो मैंने सोचा भी नहीं था! काम पूरा होते ही ड्रेगन मुझे पांच लाख रुपये देगा। बस, फिर मेरी जिन्दगी ऐश से बीतेगी।
यह लो रोबोट से सम्बन्धित कागजात। अब मुझे और मेरी बेटी को छोड़कर यहां से दफा हो जाओ!
आहा! इतनी जल्दी भी क्या है प्रोफेसर! पहले मुझे इन कागजातों को चैक तो कर लेने दो।
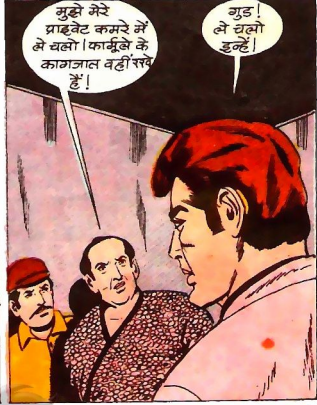
कागजातों का निरीक्षण करने के पश्चात्-
ठीक है, वही कागजात हैं।
जैक और पीटर, तुम दोनों रोबोट को उठाने मेरे साथ प्रयोगशाला चलो और बाकी सब प्रोफेसर और कामनी को लेकर गाड़ी में पहुंचो।
क्या मतलब? अब तुम हमें कहां ले जाना चाहते हो? फार्मूला तो मैंने तुम्हारे हवाले कर ही दिया है।
बिना तुम्हारे यह फार्मूला हमारे बॉस के लिए बेकार होगा प्रोफेसर। अतः मजबूरी में तुम्हें भी साथ ले जाना होगा। परन्तु घबराओ नहीं। तुम्हें वहां कोई कष्ट नहीं होगा।
चलो दोस्तो, इन्हें आदरपूर्वक ले जाओ।
तभी न जाने कैसे प्रोफेसर का वफादार नौकर शम्भु वहां आ पहुंचा।
खबरदार, मालिक को छोड़ दो, वरना मैं एक-एक को भूनकर रख दूंगा।
अरे! यह कम्बख्त कहां से आ मरा?
शाबाश शम्भु! खूब मौके पर आये। तुम इन्हें इसी तरह कवर किये रहो। मैं तब तक पुलिस को फोन करता हूं।
ठीक है मालिक!
ओह! इस बूढ़े नौकर का तो मुझे ध्यान ही नहीं रहा था। यदि किसी तरह इसे खत्म नहीं किया गया तो सारा खेल चौपट करके रख देगा!

हैलो, पुलिस स्टेशन! मैं प्रो. भार्गव बोल रहा हूं। कृपया तुरन्त मेरी प्रयोगशाला में पहुंचिये। कुछ बदमाश मेरा आविष्कार उड़ाना चाहते हैं। उनमें मेरे असिस्टेंट जैकब का भी हाथ है।
हम तुरन्त पहुंच रहे हैं प्रोफेसर! तब तक आप किसी तरह उन्हें रोके रहिये।

लेकिन जैसे ही प्रोफेसर ने सम्बन्ध विच्छेद कर रिसीवर क्रेडिल पर रखा–
धांय-धांय!
आह!
ओ... नो!

अपने वफादार नौकर को मरते देख प्रोफेसर क्रोध से पागल हो जैकब पर झपटे–
नीच, कमीने, खूनी, मैं तुझे...!

लेकिन–
आह!

पुलिस कुछ ही देर में यहां पहुंचती होगी। तुम लोग इसे और कामनी को लेकर तुरन्त गाड़ी में पहुंचो। मैं, पीटर और जैक रोबोट को लेकर वहीं पहुंचते हैं।
ओ.के. मि. जैकब!

उसके बाद जैकब पीटर और जैक के साथ प्रयोगशाला की ओर बढ़ गया...
... व अन्य बदमाश प्रोफेसर और कामनी को लेकर इमारत के बाहर खड़ी गाड़ी में पहुंच गये।
शीघ्र ही—
लो, वो आ गये। चलो, तुम सब जल्दी से गाड़ी में बैठ जाओ।
रोबोट को गाड़ी के पिछले हिस्से में रखने के साथ ही जैक, पीटर और जैकब भी गाड़ी में सवार हुए और गाड़ी तेज रफ्तार से बाहर की ओर दौड़ पड़ी।
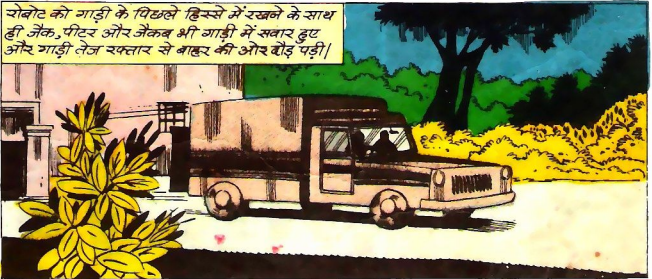
जैकब आदि के जाने के कुछ देर पश्चात् ही पुलिस की जीपें वहां आकर रुकीं।
ओह! गेट खुला हुआ है और भीतर पूर्णतया सन्नाटा छाया है। जरूर अपराधी अपने काम में सफल हो गये लगते हैं।
सुनो, आधे लोग चारों तरफ घेरा डाल दो और आधे मेरे साथ आओ! ध्यान रहे, कोई भी खतरा किसी भी क्षण हमारे सामने आ सकता है। अतः सावधान रहना!
यस सर!
जब पुलिस आफिसर प्रयोगशाला और कई कमरों में झांकने के पश्चात् प्रोफेसर के प्राइवेट कमरे में पहुंचा-
ओह, खून!
सुनो, तुम दोनों यहीं रहो। बाकी सब इमारत का चप्पा-चप्पा छान मारो। प्रोफेसर भार्गव कोई साधारण व्यक्ति नहीं हैं। उनका मिलना बहुत जरूरी है।
ओ.के. सर!

परन्तु जब पूरी इमारत की खाक छानने के बावजूद भी उन्हें वहां कोई नहीं मिला तो पुलिस आफिसर बौखलाकर अपने उच्चाधिकारियों से बात करने पर मजबूर हो गया।

सर, मैं इंस्पेक्टर श्याम बोल रहा हूं। प्रोफेसर भार्गव और उनकी बेटी का किन्हीं अज्ञात लोगों ने रहस्यपूर्ण परिस्थितियों में अपहरण कर लिया है और यहां उनके नौकर की लाश पड़ी है।

क्या? ठहरो, मैं अभी पहुंचता हूं।

प्रो. भार्गव के अपहरण की घटना कोई मामूली बात नहीं थी, तुरन्त पुलिस मशीनरी हरकत में आ गई।

अगले दिन के तमाम समाचार-पत्र प्रो. भार्गव व उनकी बेटी के अपहरण के मामले को लेकर तरह-तरह की अटकलबाजियों से भरे पड़े थे।

दैनिक संध्या

अज्ञात बदमाशों द्वारा विख्यात वैज्ञानिक प्रोफेसर भार्गव का अपहरण

दैनिक भारत

प्रो. भार्गव अपनी बेटी और एक सहायक के साथ गायब.

जय-जवान

प्रो. भार्गव का अपहर
द्वारा नौकर का खून

हिन्द-केसरी

प्रो भार्गव का अपहरण एक ढोंग.
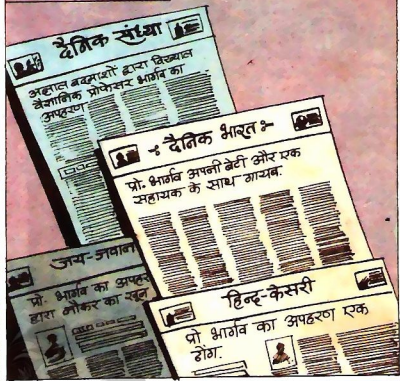
इधर प्रो. भार्गव के अपहरण की सूचना मिलने पर पूरी सरकारी मशीनरी में भी हंगामा मच गया।

क्या? यह कैसे हुआ?

उन्हें हर कीमत पर खोजा जाये।

कमिश्नर, पूरे शहर को छान मारो। प्रोफेसर हर कीमत पर मिलना चाहिये।

गृहमंत्री के आदेश पर पुलिस के उच्चाधिकारियों ने भी विचार-विमर्श करने के लिये एक विशेष मीटिंग बुलाई।

समझ में नहीं आता कि अपहरणकर्ता प्रोफेसर भार्गव और उनकी बेटी को कहां ले गये? पूरी छानबीन करने के बावजूद भी अभी तक उनका कोई सुराग नहीं लगा।

आश्चर्य की बात तो यह है कि उनका असिस्टेंट जैकब भी गायब है और अन्य तीनों सहायकों को इस सम्बन्ध में कुछ भी मालूम नहीं है!

सर, मेरे दिमाग में एक बात और आ रही है...
...कहीं ऐसा तो नहीं कि वास्तव में उनका अपहरण हुआ ही न हो, बल्कि उन्होंने स्वयं ही किसी किस्म के लालच में पड़कर अपने अपहरण का षड्यंत्र रचा हो।
क्या मतलब? क्या कहना चाहते हैं आप?
सर, यह तो आप भी जानते हैं कि उनका आविष्कार काफी महत्त्वपूर्ण था। उस आविष्कार को पाने के लिये कोई भी देश मुंहमांगी रकम दे सकता है। हो सकता है, ऐसे ही किसी देश के हाथों वे बिक गये हों और अपने अपहरण का ढोंग रचाकर यहां से भाग निकले हों।
ओह! यह बात तो हमारे दिमाग में आई ही नहीं! ऐसा हो सकता है!
बिल्कुल ऐसी ही बात होगी सर! और मुझे तो यह भी विश्वास है कि उनके इस षड्यंत्र में उनका सहायक जैकब भी शामिल हो गया होगा। चूंकि उनके षड्-यंत्र का पर्दा फाश न हो जाये, इसलिये उन्होंने अपने वफादार नौकर का मुंह, हमेशा-हमेशा के लिये बंद कर दिया।
बात जो भी हो आफिसर! मैं केवल इतना चाहता हूं कि प्रो. भार्गव को जल्द से जल्द खोज निकाला जाए। चाहे उनका अपहरण हुआ हो या वे स्वयं गायब हुए हों। देश से बाहर निकलने के तमाम मार्ग पहले से बंद किये जा चुके हैं। अत: मुझे आशा है कि आप लोग अपनी चुस्ती-फुर्ती से उन्हें जल्द से जल्द ढूंढ निकालेंगे, अब आप लोग जा सकते हैं।
यस सर, हम पूरी कोशिश करेंगे।

परन्तु कोई भी नहीं जानता था कि शहर से दूर शांत खड़े उस काले पर्वत के भीतर क्या गुल खिल रहा है।

उस काले पर्वत के गर्भ में विश्व के भयंकरतम् अपराधी ड्रेगन ने अपना भयानक अड्डा कायम कर रखा था। वैसे तो ड्रेगन कानून की नजरों में मुजरिम था और विश्वभर की पुलिस को उसकी तलाश थी, लेकिन कभी-कभी कोई देश गुप्त रूप से उसे मुंह मांगी रकम देकर उसकी सेवा भी प्राप्त कर लेता था। यह सेवा कोई भी देश अपने दुश्मन देश में मार-काट और खूनी हंगामा मचाने के लिये ही प्राप्त करता था, ताकि उनका मकसद भी पूरा हो जाये और किसी देश को उस पर सन्देह भी न होने पाए।

प्रो. भार्गव और उनकी बेटी कामनी इस समय उसी के अड्डे में उसकी कैद में थे।

हा...हा...हा... लो देखो प्रोफेसर! आज के तमाम समाचार-पत्र तुम्हारी तारीफों से भरे पड़े हैं।

अखबारों की मोटी-मोटी सुर्खियों पर नजर पड़ते ही प्रो. भार्गव का चेहरा रुआंसा-सा हो उठा।

य... यह सबकुछ तुम लोगों के कारण ही हुआ है शैतानो! तुम लोगों के कारण ही मैं समाज और कानून की नजरों से गिर गया हूं।
चलो, ऐसा ही समझ लो प्रोफेसर! अब यह बताओ कि तुम हमारे साथ मिलकर ऐश की जिन्दगी जीना चाहते हो या बद-नामी से भरी एक यातना पूर्ण जिन्दगी!
मैं मरना पसंद करूंगा शैतान, लेकिन तुम्हारे लिये काम करना बिल्कुल भी पसंद नहीं करूंगा!
एक बार फिर ठंडे दिमाग से सोच लो प्रोफेसर! इन्कार करने की अवस्था में पहले तुम्हारी लड़की की इज्जत तुम्हारी ही आंखों के सामने लूटी जायेगी...
...उसके बाद तुम्हें आजाद कर दिया जायेगा। ताकि पुलिस तुम जैसे देशद्रोही को जिन्दगीभर चक्की पीसने के लिये जेल में डाल दे।
नहीं-नहीं, तुम ऐसा नहीं करोगे।
तुम्हारे इन्कार करने पर बिल्कुल ऐसा ही किया जायेगा प्रोफेसर! इसलिये अच्छी तरह सोच लो।
उफ! हे ईश्वर, यह तू मुझे किन पापों की सजा दे रहा है? क्या वास्तव में मुझे देश से गद्दारी करनी पड़ेगी?

क्या सोचने लगे प्रोफेसर! मुझे जवाब चाहिये। हां या ना, फैसला कर लो। तुम्हें खुशियों से भरी जिन्दगी चाहिये या ठोकरों से भरी जिन्दगी!
मुझे क्या करना होगा?
कुछ देर सोचने-विचारने के पश्चात् प्रोफेसर ने मन-ही-मन जैसे कोई फैसला कर लिया था।
सबसे पहले तुम्हें आयरनमैन का मस्तिष्क मेरे अधीन करना होगा, ताकि वह केवल मेरे ही आदेश का पालन करे। उसके बाद तुम्हें लौह-मानवों की एक फौज मेरे लिये तैयार करनी होगी।
तुम आयरनमैन और लौह-मानवों से क्या काम लोगे?
इस प्रश्न का जवाब मैं तुम्हें तभी दूंगा, जब तुम अपना काम पूरा कर लोगे।
ठीक है, मैं तैयार हूं। परन्तु मेरी भी दो शर्तें हैं।
कहो।
मेरी पहली शर्त है, मेरी बेटी कामनी की सुरक्षा की गारंटी!
हम वचन देते हैं कि वह हमारे पास एक बेटी की तरह पूरी हिफाजत से रहेगी। अपनी दूसरी बात बताओ।

मेरी दूसरी शर्त है, जैकब की मौत!
हा...हा...हा... हमें तुम्हारी यह शर्त भी मंजूर है प्रोफेसर!
न... हीं...!

जैकब गिड़गिड़ा उठा!
नहीं-नहीं बॉस, मुझ पर रहम कीजिये। मैंने तो आपसे पूरी वफादारी निभाई है।

परन्तु ड्रेगन पर उसकी गिड़गिड़ाहट का कोई प्रभाव नहीं पड़ा।
पीटर, जैकब को इसकी वफादारी का इनाम दे दो।
ओ.के. बॉस!
रहम बॉस, रहम! मुझे मत मारिये।

और-
बॉस, न... हीं...ई... ई....
हा...हा... हा...!
धांय

सुनो पीटर, तुम प्रोफेसर को इनका कमरा और प्रयोगशाला दिखा दो तथा कामली को कमरा नम्बर सात में पहुंचा दो।
ध्यान रहे, इन्हें किसी भी किस्म की कोई तकलीफ नहीं होनी चाहिए।

निश्चिंत रहें बॉस! मैं स्वयं इनकी देख-भाल करूंगा।

जब पीटर कामनी और प्रोफेसर को लेकर वहां से चला गया—
जैक, तुम इस कुत्ते की लाश को ले जाकर शहर के किसी गटर में डाल दो!
बहुत अच्छा बॉस!

उसी दिन से प्रोफेसर भार्गव आयरन-मैन के मस्तिष्क में परिवर्तन करने में जुट गये।

दो दिन बाद—
जाओ, अपने बॉस को सूचना दो कि मैंने आयरनमैन के मस्तिष्क में परिवर्तन कर दिया है और यह उनकी आज्ञा का पालन करने के लिये तैयार है।
वेरी गुड! निःसन्देह, बॉस यह सूचना पाकर तुमसे अत्यन्त प्रसन्न होंगे प्रोफेसर!

सूचना मिलते ही ड्रेगन वहां आ पहुंचा।
प्रोफेसर! क्या यह सच है कि तुमने रोबोट का मस्तिष्क परिवर्तित कर दिया है।
हां, इसके मस्तिष्क में फिट कम्प्यूटर से जो टेप जुड़ी थी, उसमें अब मैंने तुम्हारे लिये विशेष बातें भर दी हैं। इसके ऑन होते ही वह टेप इसके कम्प्यूटर मस्तिष्क को तुम्हारे बारे में सबकुछ बता देगा। तब यह न केवल तुम्हें पहचान लेगा...
...बल्कि तुम्हारे आदेशों का पालन भी करेगा।
बहुत खूब प्रोफेसर। हम तुम्हारे इस कार्य से अत्यन्त प्रसन्न हुए।
सुनो ड्रेगन, मैंने इसका मस्तिष्क परिवर्तित करने के साथ-साथ इसमें उड़ने की विशेषता भी पैदा कर दी है। सीने पर लगे इस बटन को दबाने पर यह कहीं भी उड़कर आ-जा सकता है और दूसरे बटन को दबाने पर यह नीचे उतर सकता है।

निःसन्देह, तुम ग्रेट हो प्रोफेसर! अब ज़रा हमें इसका परीक्षण दिखाओ!

ठीक है! अभी दिखाता हूं!

प्रोफेसर द्वारा रोबोट के पीछे लगे बटन के दबाने पर रोबोट एक पल के लिये तो खामोश रहा, फिर उसके मुंह से घरघराती हुई मनुष्य की साफ आवाज निकली।

नमस्कार ऐ मेरे महान् स्वामी! आपका यह तुच्छ सेवक आपकी सेवा में हाज़िर है।

आहा! इसने तो मुझे वास्तव में पहचान लिया है। यानी प्रोफेसर ने अपना काम बखूबी निभाया है!

गजब!

- ड्रेगन ने आयरनमैन से क्या कार्य लिया?
- वास्तव में ड्रेगन कौन था और उसने किस देश के लिये काम किया था?
- क्या प्रोफेसर की बेटी ड्रेगन के अड्डे पर सुरक्षित रह सकी?
- क्या राम-रहीम आयरनमैन से टक्कर ले सके?
- यह सब जानने के लिये पढ़ें :-

आयरनमैन और राम-रहीम

समाप्त

मुद्रक : अशोका आफसेट वर्क्स, दिल्ली फोन : 504783, 7116936